भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए ०७-१३ दिसंबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह

(५६ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	दिसंबर माह में वर्षा की स्थिति (मिली मी.)							साप्ताहिक सलाह
दिनांक	7	8	9	10	11	12	13	
गुलाबी सूँडी: गुजरात, आंध्रप्रदेश, तेलंगना, महाराष्ट्र और कर्नाटक के कुछ क्षेत्रों से बोलगार्ड II बीटी संकरों पर गुलाबी सूँडी की क्षति तथा जीवित सूँ डियाँ रिकार्ड की गई हैं। सी.आई.सी.आर. की साप्ताहिक परामर्शी में दिए गए प्रबंधन उपायों को तुरंत अपनाएँ तथा इस सूँडी की सतत निगरानी तथा निरीक्षण करते रहें।								
उत्तरी कपास क्षेत्र								
उत्तरी कपास क्षेत्र के अधिकांश भागों में कपास चुनाई का कार्य लगभग पूरा हो चुका है।								
उड़ीसा								
कोरापुट	0	0	0	0	0	0	0	कपास की फसल दूसरी चुनाई की अवस्था में है। गुलाबी सूँडी के लिए हरे गूलरों का निरीक्षण करते रहें। बचे हुए हरे गूलरों की वृद्धि के लिए 1.5% डी.ए.पी. के साथ 0.75% पोटेशियम नाइट्रेट का फसल पर छिड़काव करें। पहली चुनाई की कपास को अलग से रखें तथा कपड़े के साफ थैलों में भण्डारित करने से पहले ठीक से सुखा लें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों में न भरें। गुलाबी सूँडी के प्रकोप के नियंत्रण के लिए दिसंबर में आवश्यकतानुसार संश्लेषित पाइरेथाइड का फसल पर छिड़काव करें।
कालाहांडी	0	0	0	0	0	0	0	
बोलांगीर	0	0	0	0	0	0	0	
गुजरात								
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	फसल कटाई की अवस्था में है। दूसरी तथा तीसरी चुनाई जारी है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि फसल की अवधि को आगे बढ़ाने के स्थान पर दिसंबर के महीने में ही समाप्त कर दें। ऐसा करना गुलाबी सूँडी के प्रकोप को कम करने तथा बीटी कपास के प्रति गूलर की सूँडियों में प्रतिरोधकता निर्माण को टालने के लिए आवश्यक है। पिछले वर्ष की कपास की फसल की सूखी लकड़ियों/डंठल खेत की मेंढ़ों पर ढेर लगाकर रखी देखी जा रही हैं। कपास
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	0	

राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	के डंठलों, फसल-अवशेषों तथा क्षतिग्रस्त कपास को इकटठा करके न रखें। कपास के डंठलों तथा फसल अवशेषों को जलाने के स्थान पर इ नका कम्पोस्ट बनाएँ। गोदाम अथवा घरों में भण्डारित पुरानी कपास गुलाबी सूँडी के पतंगों के वाहक का कार्य करेगी। यदि बीज गुलाबी सूँडी से क्षतिग्रस्त हैं तो इन्हें तुरन्त नष्ट कर दें। चुनी हुई कपास के साफ-सुथरी बनी रहने को सुनिश्चित करें तथा कपड़े के साफ थैलों में सुखाकर भरकर रखें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों का प्रयोग न करें।
भरूच	0	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश								
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0	फसल गूलर निर्माण तथा गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। मध्य प्रदेश के कुछ भागों से बीजी ॥बीटी कपास पर गूलर की गुलाबी सूँडी देखी गई है। अंतिम चुनाई के तुरन्त बाद फसल को समाप्त करने की किसान भाइयों को सलाह दी जाती है। इससे गुलाबी सूँडी विलंबित फसल पर जीवित नहीं रह सकती। पहली चुनी हुई कपास को ठीक से सुखाकर अलग से साफ-सुथरे कपड़े के थैलों में भरकर रखें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों में कपास न भरें।
धार	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								
नागपुर	0	0	0	0	0	0	0	अकोला तथा अमरावती के कुछ हिस्सों में बीजी ॥बीटी कपास पर गुलाबी सूँडी का ग्रसन पाया गया है। किसानों को फसल को शी घ्र समाप्त करने की सलाह दी जाती है तथा इसे आगे विस्तार न दें। चुनी हुई कपास साफ-सुथरी बनाएँ रखें तथा कपड़े के साफ थैलों में भण्डारित करें। कपास को संदूषित होने से बचाने के लिए जूट के बोरों में न भरें। कपास के डंठलों , फसल अवशेषों तथा ग्रसित कपास को भण्डारित करके न रखें। डंठलों तथा फसल अवशेषों को जलाने की अपेक्षा कंपोस्ट बनाएँ। कपास चुनाई का कार्य यथाशीघ्र समाप्त करें।
वर्धा	0	0	0	0	0	0	0	
चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	0	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	0	0	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	0	
नांदेड़	0	0	0	0	0	0	0	
बीड़	0	0	0	0	0	0	0	
वासिम	0	0	0	0	0	0	0	
धुले	0	0	0	0	0	0	0	

जलगांव	0	0	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
तेलंगाना								
आदिलाबाद	0	0	0	0	0	30	0	कपास की दूसरी चुनाई अधिकांश खेतों में चल रही है। पिछेती फसल में अथवा देरी से परिपक्व होने वाले बीजी ॥बीटी संकरों के कुछ खेतों में हरे गूलर हैं। ऐसे खेतों में तुरन्त फीरोमोन ट्रैप लगाकर गुलाबी सूँडी का निरीक्षण करते रहें तथा प्रति खेत 20 से 50 हरे गुलरों को खोलकर गुलाबी सूँडी की क्षति तथा संख्या दर्ज करें। यदि ट्रैप में पतंगों की पकड़ 8 पतंग/ट्रैप/रात्रि सतत 3 रातों तक आने की आर्थिक हानि सीमा पहुँचने पर सिफ़ारिश किए गए नियंत्रण उपायों को अपनाएं। फसल को सिंचाई तथा उर्वरक देकर फसल को आगे न बढ़ाएँ क्योंकि बाद में बने हरे गुलरों में गुलाबी सूँडी आकर्षित होती है। बीजी ।, बीजी ॥ बीटी कपासों में तथा गैर बीटी कपास में भी हरे गुलरों में गुलाबी सूँडी की क्षति का निरीक्षण करते रहें विशेषत: उन खेतों में जहाँ पिछले फसलकाल में फसल को मार्च/ अप्रैल, 2015 तक रखा गया था। काटकर देखे गए 20 हरे गुलरों में गुलाबी सूँडी की क्षति 20% से अधिक पाए जाने पर हरे गुलरों को और अधिक क्षति से बचाने के लिए फसल पर तुरन्त संश्लेषित पाइरेथ्राइड का छिड़काव करें।
वारंगल	0	0	0	0	0	30	27	
खम्मन	0	0	0	0	0	16	27	
कारिंगर	0	0	0	0	0	30	27	
नालगोंडा	0	0	0	0	0	5	20	
आंध्र प्रदेश								
गुन्टूर	0	0	0	0	0	0	19	
प्रकासम	0	9	0	0	0	0	19	
कर्नाटका								
धारवाड़	0	0	0	0	5	0	0	कुछ जिलों में चक्रवाती वर्षा से कपास की फसल प्रभावित हुई है। फसल से अतिरिक्त जमा पानी को निकाल दें। ऐसे स्थानों पर कपास की चुनाई का कार्य 2-3 दिनों तक धूप निकलने के बाद ही प्रारंभ करें। वर्षा से भीगी हुई कपास को अलग से बेचें। पिछेती और सिंचित फसल रात के कम तापमान तथा ठंडे मौसम के कारण लाल पत्ती रोग से अधिक प्रभावित है। किसानों को सलाह दी जाती है कि 15 दिनों के अंतराल पर पानी में घुलनशील 19:19:19 उर्वरक (10 ग्रा./ली.पानी) का मेग्नीशियम सल्फेट (1.0%) के साथ फसल पर दो छिड़काव करें। अगेती फसल में जहाँ चुनाई का कार्य पूरा हो चुका है, फसल अवशेषों को उखाड़कर कम्पोस्ट बनाने के काम में ले सकते है। इसे जलाएँ नहीं और इंधन के रूप में भी प्रयोग न करें। ट्रैक्टर चलित रोटोक्षेषर से भी फसल अवशेषों को विकल्प के तौर पर मिट्टी में मिला सकते हैं।
हवेरी	0	0	0	0	0	0	5	
मैसूर	0	19	0	0	9	8	4	

तामिलनाडु								
पेरंबलुर	11	18	5	3	0	0	0	बारानी कपास में उत्तर-पूर्वी मानसून से प्राप्त वर्षाजल को संग्रह करने तथा मृदा नमी संरक्षण के उपाय करें। इस सप्ताह भारी वर्षा होने का अनुमान है जिससे फसल को नुकसान हो सकता है। खेत से अतिरिक्त वर्षाजल निकालने का प्रबंध करें। श्रीविलीपुत्तुर में शीतकालीन कपास लगाई गई है। मौसम ठंडा है तथा छिट-पुट वर्षा हो रही है। फसल गूलर विकास अवस्था में है। रस चूषक कीटों, सफ़ेद मक्खी तथा फूलकीट का प्रकोप देखा जा रहा है। *मायरोथीसियम* पत्ती धब्बा, जड़ गलन तथा मुरझान का प्रकोप दर्ज किया गया है।
सलेम	6	12	3	0	3	0	0	
त्रिची	7	16	4	3	0	0	0	
विरुडुनगर	13	24	15	35	24	3	8	

वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	51-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	**पता**
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डीसूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)

वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. परमजीत सिंह	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय,(पंजाब)	9463628801	rsmeenars@gmail.com
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, (पंजाब)	9464051995	pankaj@pau.edu

डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	9416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, सिरसा-124004 (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. के. एन. भाटिया	स्वामी केशवानन्द राजस्थान, कृषि विश्वविद्यालय,गंगानगर (राजस्थान)	9352700411	bsmeena1969@rediffmail.com
डॉ. हरफूल मीणा	महारणा प्रताप, कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)	9460246043	hpagron@rediffmail.com
डॉ. नरेंद्र कुमार	सीएसए- कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)	9335699132	jagdishk64@yahoo.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	9662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. एम.डी. खानपारा	जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ -362001 (गुजरात)	9426990070	cotton@jau.in
डॉ. आर.डब्लू. भरूद	महात्मा फुले कृषि विद्याहपीठ, रीउरी-413722 (महाराष्ट्र)	9850244087	cotton_mpkv@rediffmail.com
डॉ. आर.आर. पाटिल	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्याहपीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	9657725801	srscottonpdkv1@yahoo.co.in
डॉ.पी.आर.झाँवर	मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय, प्रभनी-431402 (महाराष्ट्र)	7588151244	crsned@indiatimes.com
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	9406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	9437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. शर्मा	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, नांदयाल (आंध्रप्रदेश)	08514-242296	sharmarars@gmail.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	9448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. भीमना	रायचूर कृषि विश्वविद्यालय, रायचूर-584102 (कर्नाटक)	9448633232	bheemuent@rediffmail.com

हिन्दी संसकरण:

उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अधिकारी,
केकअनुसं , नागपुर (महाराष्ट्र)